

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 497]

नई विल्ली, सोमबार, नवम्बर 28, 1977 ग्रग्नहायरा 7, 1899

No. 497]

NEW DELHI, MONDAY, NOVEMBER 28, 1977/AGRAHAYANA 7, 1899

इ.६. भारत में भिना, पाठ राहका के जाती के जिसमें पित का असमा संसक्तन के रूप में स्वा जा सके।

Separate pasing is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Industrial Development)

ORDER

New Della, 28th November 1977

S.O. 786(E)/15/IDRA/77.—Whereas, the industrial undertaking known as Messrs Indian Health Institute and Laboratory Limited, Calcutta, is engaged in the scheduled industry, namely, drugs and pharmaceuticals industry and chemicals industry.

And whereas the Central Government 15 of the opinion that there has been a substantial fall in the volume of production in respect of the articles manufactured in the said industrial undertaking, for which, having regard to conditions prevailing, there is no justification,

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 15 of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), the Central Government hereby appoints, for the purpose of making a full and complete investigation into the circumstances of the case, a body of persons consisting of.—

Chairman

(1) Shri S. C. Sarkar, Secretary, Department of Closed and Sick Industries, Government of West Bengal, Calcutta.

Member

(2) Shri A K Roy Choudhury, Deputy Adviser (Finance), Bureau of Public Enterprises, Ministry of Finance, New Delhi.

The said body shall submit its report by the end of December, 1977,

[No F. 4/7/74-CUC]

G. V. RAMAKRISHNA, Addl. Secy

उद्योग भंत्रालय

(श्रौद्योगिक विकास विभाग)

ग्रादेश

नई दिल्ली, 28 नवम्बर, 1977

का०प्रा० 786 (म्र)/15/उ०दि०वि०प्र०/77 ——मैसर्स इंडियन हैल्य इस्टिट्यूट एण्ड लेबो-रेटरी लिमिटेड कलकत्ता, नामक श्रौद्योगिक उपक्रम व श्रन्यूचित उद्योग, "र्थात् श्रौपिध श्रौर भैपजिक उद्योग श्रौर रमायन उद्योग मे लगा हुस्रा है;

श्रीर केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि उक्त श्रीबोगिक उपक्रम में विनिर्मित वस्तुश्री की बाबत उत्पादन की माला में पर्याप्त कमी हुई है जिसके लिए, विद्यमान परिस्थितियों को ध्यान में रखने हुए कोई श्रीचित्य नहीं है;

श्रतः, श्रव, केन्द्रीय सरकार, उद्योग (विकास म्रोट विनियमन) श्रविनियम, 1951 (1951 का 65)की धारा 15 द्वारा प्रदत्त सक्तियों का प्रयोग करते हुए, मामले की परिस्थितियों का पूरा श्रीर सपूर्ण श्रन्थेयण करने के प्रयोजन के लिए, व्यक्तियों के एक निकाय की नियुक्ति करती है, जिसमें निम्नलिखित होंगे —

ग्रहपक्ष

- 1 श्री एम० मी० सरकार, मिचव बन्द ग्रीर रुग्ण उद्योग विभाग, पश्चिमी बगाल सरकार, कलकत्ता । सदस्य
- 2 श्री ए० के० राय चौधरी, उपसलाहकार (वित्त), लोक उपक्रम व्यूरो, वित्त सवालय, नई दिल्ली । उ≉त निकाय अपनी रिपोर्ट दिसम्बर, 1977 के श्रन्त तक दे देगी ।

[स॰ फा॰ 4/7/74-मी॰यू॰मी०]

जि० वि० रामकृष्णा, श्रपर सचिव।